अरस्तु, स्वामी विवेकानंद एवं श्रीमद्भगवद्गीत के नैतिकता संबंधी अवधारणाओं का दार्शनिक एवं तुलनात्मक अध्ययन

दर्शनशास्त्र विभाग

(मानविकी संकाय)

राँची विश्वविद्यालय, राँची

में पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रस्ताव

2025

शोध निर्देशिका

डॉ० पुष्पा सिंह

विभागाध्यक्ष

सह प्राध्यापक

दर्शनशास्त्र विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

आशा सिंह

दर्शनशास्त्र विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

अरस्तु, स्वामी विवेकानंद एवं श्रीमद्भगवद्गीत के नैतिकता संबंधी अवधारणाओं का दार्शनिक एवं तुलनात्मक अध्ययन

समाज और राष्ट्र के लिए विकास, प्रगति और परिवर्तन का आधार मानव है जिसमें शारीरिक, बौद्धिक और भौतिक विकास के साथ-साथ चरित्र निर्माण, नैतिकता और व्यक्तित्व का भी विकास होता है, लेकिन वर्तमान समय में बढ़ते तकनीकी, सामाजिक दबाव, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और सामाजिक परिवर्तन के कारण वह दिशाहीन हो रहे हैं और अपने उद्देश्य से भटक रहे हैं। आज मानव अशांति का प्रतीक होता जा रहा है और उसे अनुशासनहीन माना जा रहा है। वैश्वीकरण में मनुष्यों ने समाज को बहुत हद तक प्रभावित किया है। यह एक गंभीर विषय है जिसका समाधान नैतिकता को पुनः स्थापित करके किया जा सकता है। नैतिक सिद्धांत मनुष्य का मार्गदर्शन करने में कहाँ तक सफल हो सकते हैं। इस अध्ययन में इन्हीं महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया जाएगा

1. परिचय (Introduction):

नैतिकता लैटिन शब्द 'मोरालीस' (Moralis) से बना है जिसका अर्थ है रीति-रिवाज या शिष्टाचार। नैतिकता वह क्षेत्र है जो किसी समाज या संस्कृति द्वारा अपनाए गए मूल्यों के मौजूदा समूह पर ध्यान केंद्रित करता है कि कोई कार्य उन मूल्यों के अनुरूप है या नहीं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं की नैतिकता वह सामाजिक व्यवस्था है जो किसी समाज के सदस्यों के लिए नैतिक मूल्यों का आचरण के प्रतिमानों का निर्धारण करती है, साथ यह प्रयास करती है कि समाज के सभी सदस्यों का व्यवहार उन्हीं के मूल्य व प्रतिमानों के अनुरूप हो। हर समाज कि अपनी नैतिक अवधारणाएं हो सकती है। नैतिकता कि उत्पत्ति रीति-रिवाज और परंपराओं से होती है, इसलिए यूनानी दार्शनिकों ने नैतिक और सामाजिक शब्द का बदल-बदल कर उपयोग किया है अतः हम कह सकते हैं कि नैतिकता हमारा जीवन जीने का तरीका है। नैतिकता ही सद्गुण है इसका आधार पवित्रता, ईमानदारी और सत्यता आदि है। यह मानव केंद्रित तथा मानवीय प्रयत्नों में निहित है जो मानव और पशु में फर्क पैदा करता है। मनोविज्ञान में नैतिकता को नैतिक मूल्यों की जननी कहते हैं। नैतिक मूल्यों का अभिप्राय प्रेम, भाईचारा, करुणा, दया, सहयोग, मंगलकामना, न्यायप्रियता, सत्य और अहिंसा आदि भावनाओं से है जो मानव को पशु से भिन्न बनाता है।

नैतिकता दर्शनशास्त्र की नीतिशास्त्र शाखा का एक प्रमुख विषय है। नैतिकता वह विषय वस्तु है जिसका अध्ययन नीतिशास्त्र के अंतर्गत होता है अर्थात नीतिशास्त्र एक विषय है जो नैतिक, अनैतिक और निरनैतिक व्यवहारों या कार्यों का अध्ययन करता है और नैतिकता उसके भीतर विषय वस्तु के रूप में मौजूद रहती है। नैतिकता विशेष रूप से चरित्र निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। इसका उद्देश्य यह जानना है कि कौन से कार्य 'सही' है और कौन से कार्य 'गलत'। एक अच्छा व्यक्ति बनने के लिए नैतिकता 'उचित' और 'अनुचित' के बीच अंतर करना सिखाती है जो विशेष रूप से नैतिकता को चरित्र निर्माण से जोड़ता है। इसका उद्देश्य यह जानना है कि "एक अच्छा इंसान कैसे बना जाए"। एक अच्छा व्यक्ति बनने के लिए कौन-कौन से गुण का विकास करना चाहिए और कैसे जीवन को नैतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। नैतिकता यह बतलाती है कि किसी व्यक्ति के चरित्र में सद्गुण जैसे कि सत्य, दया, साहस, न्याय, और धैर्य आदि गुण होने चाहिए। ये गुण जीवन में नैतिक निर्णय लेने के लिए आधार प्रदान करते हैं।

18 वीं शताब्दी में पश्चिमी दार्शनिक सुकरात, प्लेटो एवं अरस्तु ने नैतिकता के सिद्धांतों पर अधिक जोर दिया। नैतिकता के विषय में सबकी अपनी-अपनी मान्यताएं हैं।

सुकरात के अनुसार- ज्ञान ही नैतिकता का मूल आधार है। वे कहते हैं, "ज्ञान ही सद्गुण है" अर्थात उनके अनुसार मनुष्य के लिए ज्ञान प्राप्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

प्लेटो ने नैतिकता को न्याय और सद्गुण से जोड़ा। उनका मानना था कि व्यक्ति के आत्मिक विकास से सद्गुण विकसित होते हैं। उन्होंने 'The Republic' में चार मुख्य सद्गुणों का वर्णन किया: प्रज्ञा, साहस, संयम और न्याय।

अरस्तु ने नैतिकता का सिद्धांत प्रस्तुत किया जिसका आधार व्यक्ति के गुण हैं न कि केवल उसके कार्य। उनका मानना था कि नैतिकता का उद्देश्य मानव जीवन में "सर्वोत्तम अच्छाई" या "समृद्ध जीवन" प्राप्त करना है। नैतिकता वह है जो किसी व्यक्ति और उसके द्वारा किए गए कार्यों दोनों को अच्छा बनाता है।

इमानुएल कांट ने नैतिकता को 'कर्तव्य' और 'नैतिक तर्क' से जोड़ा उनके अनुसार व्यक्ति को केवल उन्हीं कार्यों को करना चाहिए जो सभी के लिए 'सही' और 'नैतिक' हो।

सेंट थॉमस एक्विनास के अनुसार- नैतिकता का आधार तर्क नहीं बल्कि करुणा और सहानुभूति है, जो समाज और व्यक्ति के लिए उपयोगी है।

यदि हम भारतीय दर्शन की बात करें तो हमें यह देखने को मिलता है कि भारतीय दर्शन की विभिन्न परंपराओं में नैतिकता का एक ही उद्देश्य है- आत्म संयम, चरित्र निर्माण और मानव जीवन का उत्थान। हिंदू दर्शन में भगवद्गीता के अनुसार नैतिकता को 'कर्तव्य' और 'निष्काम कर्म' के रूप में समझाया गया है। योग दर्शन में यम और नियम के माध्यम से चरित्र निर्माण को नैतिकता का आधार माना गया है। जैन दर्शन में त्रिरत्न एवं महाव्रत को आत्म शुद्धि और सद्गुण निर्माण का साधन माना गया है। बौद्ध धर्म में नैतिकता को अष्टांगिक मार्ग के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

उपरोक्त पश्चिमी और भारतीय दार्शनिकों से भिन्न यदि हम समकालीन भारतीय दार्शनिक पर प्रकाश डालें तो महात्मा गाँधी, डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, स्वामी विवेकानंद एवं श्री अरविंद घोष आदि ने नैतिकता को भारतीय परंपरा और आधुनिक संदर्भों के आधार पर परिभाषित किया। जिसमें नैतिकता केवल व्यक्तिगत आचरण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य समाज, राष्ट्र और संपूर्ण मानवता का कल्याण है।

इस दार्शनिक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नैतिकता मनुष्यों के लिए जीवन में दिशा और उद्देश्य प्रदान करती है। नैतिकता मनुष्यों में न केवल व्यवहार को सुधारती है बल्कि, उन्हें एक सशक्त और नैतिक चरित्र का निर्माण करने में मदद करती है जिससे नेतृत्व क्षमता का भी विकास होता है। अच्छे गुणों के अभ्यास से मनुष्यों में मानसिक स्थिरता और भावनात्मक संतुलन बनता है। नैतिकता हमें यह सिखाती है कि हमारे कार्यों का प्रभाव केवल उनके जीवन पर ही नहीं बल्कि पूरे समाज पर पड़ता है जिससे उनमें सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी की समझ बढ़ती है। अतः इस शोध के दार्शनिक अध्ययन से यह देखा जा सकता है कि कैसे नैतिकता चरित्र निर्माण में, नेतृत्व क्षमता के विकास में, सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी, मानसिक और भावनात्मक संतुलन, व्यक्तिगत विकास और सफलता में एवं आध्यात्मिक और नैतिक उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2. शोध विषय की अधतन स्थिति (State of Art):

यह शोध विषय न केवल दार्शनिक दृष्टिकोण से बल्कि सामाजिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस शोध कार्य में मानव विकास हेतु नैतिकता को महत्वपूर्ण बताया गया है। किसी भी देश के सर्वांगीण विकास के लिए सभी मनुष्यों की भागीदारी मायने रखती है। मनुष्य वही है जिसमें जोश, जुनून और असीम शक्ति समाहित होती है।

लेकिन यह शक्ति तभी सार्थक और उद्देश्यपरक हो सकती है जब वह संतुष्ट हो तथा अपनी जिम्मेदारी बखूबी समझते हो। वर्तमान समय में मनुष्य नैतिकता, धैर्य, त्याग, समर्पण, विश्वास, क्षमाशीलता, कर्मठता, कर्तव्यपरायणता, संस्कार और सम्मान जैसे गुणों से दूर होता नजर आ रहा है। इन समस्याओं का समाधान नैतिकता के निरंतर अभ्यास निर्माण से किया जा सकता है जिसे समझने के लिए अरस्तू, स्वामी विवेकानंद एवं भगवद्गीता के नैतिकता संबंधी अवधारणाओं का अध्ययन किया जाएगा।

अरस्तु (384 - 322 ईसा पूर्व) एक समृद्ध यूनानी परिवार में जन्मे प्राचीन ग्रीक दार्शनिक प्लेटो के शिष्य और विज्ञान के इतिहास में एक प्रमुख व्यक्तित्व थे। अरस्तु का पालन पोषण बौद्धिक वातावरण में हुआ और उन्हें बाल्य काल से ही शिक्षा प्राप्त करने का उचित अवसर प्रदान किया गया। अरस्तु की रचनाएं ज्ञान के हर क्षेत्र में योगदान करती है, जैसे- नीतिशास्त्र , तर्कशास्त्र, प्राकृतिक, राजनीति और सौंदर्य शास्त्र। उन्होंने मनोविज्ञान, प्राणी विज्ञान, राजनीति, भौतिक विज्ञान, आचारशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र और नीतिशास्त्र पर भी काफी लिखा है और वे निगमन तर्क (Deductive Logic) के जनक माने गए हैं। नीतिशास्त्र के क्षेत्र में उनका 'निकोमैचेन एथिक्स' पाश्चात्य नैतिक दर्शन का सर्वप्रथम व्यवस्थित ग्रंथ माना जाता है। उनका कार्य नैतिकता का आधार है। अरस्तु के नैतिकता सिद्धांत का मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि व्यक्ति एक सुखी जीवन कैसे जी सकता है। अरस्तु के नैतिकता संबंधी अवधारणाओं को समझने के लिए उसे चार मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है- सद्गुणों का स्वरूप, मध्यम मार्ग का सिद्धांत, ऐच्छिक कर्मों की परिभाषा और आदर्श नैतिक जीवन। जिसके मुख्य तत्व हैं- 1. सद्गुण- यह मनुष्य के चरित्र की विशेष स्थिति है अर्थात जिस लक्ष्य के लिए किसी आंगिक संरचना का अस्तित्व है और जिससे उसके वास्तविक स्वरूप को परिभाषित किया जाता है, उससे उसकी अनुकूलता चरित्र की वैसी स्थिति है जिसे सद्गुण कहा जाता है। यह एक आदत है जो हमारी प्रकृति को श्रेष्ठ बनती है और हमें बेहतर इंसान बनने में मदद करती है।

2. मध्यम मार्ग- सद्गुण हमेशा दो अतियों (अधिकता और न्यूनता) के बीच संतुलन का नाम है। उदाहरण के लिए 'साहस' डर और उतावलापन के बीच का संतुलन है।

3. ऐच्छिक कर्म- यह वैसी क्रिया है जिसका संपादन हम प्रयत्नों से कर सकते हैं। इसे प्रशिक्षण और आदत भी कहा जा सकता है। यह स्वाभाविक गुण नहीं है इसे अभ्यास, शिक्षा और अनुभव के माध्यम से विकसित किया जा सकता है।

4. प्रज्ञा- इसके द्वारा व्यक्ति यह तय करता है की किस परिस्थिति में क्या सही है। यह नैतिकता निर्णय लेने की कुशलता है। अरस्तु का नैतिकता सिद्धांत मनुष्यों को एक नैतिक और संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। चरित्र निर्माण और नैतिकता के प्रति उनका दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक है और किसी भी समाज के विकास के लिए आवश्यक है।

स्वामी विवेकानंद (1863-1902), आधुनिक भारत के एक महान संत, दार्शनिक, और समाज सुधारक थे। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। उनका असली नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। वे रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे जिनसे उन्होंने अध्यात्म, वेदांत, और धर्म के गहन सिद्धांत सीखा। स्वामी विवेकानंद ने भारतीय दर्शन, योग और वेदांत को न केवल भारत में बल्कि पश्चिमी देशों में भी प्रचारित किया। स्वामी विवेकानंद के विचार नैतिकता से गहराई से जुड़े हुए थे। उनके दर्शन का आधार था आध्यात्मिकता और कर्मयोग, जिसमें व्यक्तिगत चरित्र निर्माण और समाज सेवा को सर्वोपरि माना गया। स्वामी विवेकानंद के नैतिक सिद्धांत:

1. चरित्र निर्माण (Character Building): स्वामी विवेकानंद का मानना था कि चरित्र ही मनुष्य की वास्तविक शक्ति है। नैतिकता के बिना किसी भी व्यक्ति का जीवन अधूरा है।

उनका प्रसिद्ध कथन है : "शक्ति, साहस और चरित्र का निर्माण करो। यही जीवन का लक्ष्य है।"

2. आत्मनिर्भरता (Self-Reliance): विवेकानंद ने मनुष्यों को आत्मनिर्भर बनने और किसी भी प्रकार की बाहरी निर्भरता से बचने के लिए प्रेरित किया। मनुष्य स्वयं ही अपने भाग्य का निर्माता है, उनका कहना है- “हम स्वयं ही अपने वर्तमान अवस्था के लिए जिम्मेदार है और भविष्य में हम जो कुछ होना चाहें, उसकी शक्ति भी हम में है” ।

3. मध्यमार्ग (Balance in Life): उनके विचारों में, आत्मा और शरीर दोनों का विकास समान रूप से जरूरी है। उन्होंने युवाओं को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की उन्नति के लिए प्रेरित किया।

4. निस्वार्थ कर्म (Selfless Action): विवेकानंद ने भगवद्गीता के कर्मयोग सिद्धांत को अपनाया और कहा कि सच्चा नैतिक जीवन वह है, जिसमें मनुष्य निस्वार्थ होकर समाज और मानवता की सेवा करे।

5. शक्ति और साहस (Strength and Courage): विवेकानंद ने हमेशा मनुष्यों को साहसी और आत्मविश्वासी बनने की प्रेरणा दी। उनका कथन: " डरो मत, निर्भीक बनो । यह जीवन का मंत्र है। "

6. मानवता की सेवा (Service to Humanity): उन्होंने कहा, "यदि आप भगवान को देखना चाहते हैं, तो उसे गरीबों, वंचितों, और मानवता की सेवा में खोजें।

भगवान श्री कृष्णा तथा अर्जुन के संवाद के रूप में वेदव्यास द्वारा रचित गीता का भारतीय दर्शन के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसका कारण यह है कि वेदों तथा उपनिषदों में जिन नैतिक और दार्शनिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है गीता उनमें समन्वय स्थापित करके उनका सारतत्व प्रस्तुत करती है। भगवद्गीता महाभारत के भीष्म पर्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जीवन, धर्म और कर्तव्य का मार्गदर्शन दिया। 18 अध्यायों और 700 श्लोकों में विभाजित है यह ग्रंथ जीवन के हर पहलू के लिए नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करता है। निष्काम कर्मयोग (अध्याय 2 और 3)- यह सिखाता है कि व्यक्ति को बिना फल की चिंता किए निस्वार्थ भाव से अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। यह मनुष्यों को अपने कार्य पर ध्यान केंद्रित करने और असफलता के भय से मुक्त होकर आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद करता है। आत्मसंयम और इंद्रिय-नियंत्रण (अध्याय 6)- योग और ध्यान के माध्यम से मन और इंद्रियों को स्थिर रखने का उपाय बताता है, जिससे मनुष्यों में अनुशासन और आत्म-नियंत्रण की भावना विकसित होती है।

ज्ञान और विवेक (अध्याय 4)- इसका महत्व समझाते हुए गीता कहती है कि सच्चा ज्ञान ही मनुष्य को जीवन में सही दिशा प्रदान करता है। यह मनुष्यों को सही निर्णय लेने और शिक्षा का उपयोग समाज की भलाई के लिए करने की प्रेरणा देता है। समभाव और धैर्य (अध्याय 2)- यह सिखाता है कि जीवन के उतार-चढ़ाव का सामना मानसिक संतुलन और स्थिरता के साथ करना चाहिए। निस्वार्थ सेवा (अध्याय 3 और 12)- यह सिद्धांत मनुष्यों को समाज सेवा और परोपकार के कार्यों में भाग लेने के लिए प्रेरित करता है, जबकि साहस और आत्मबल (अध्याय 2 और 18)- यह विपरीत परिस्थितियों में भी अपने धर्म और कर्तव्य का पालन करने का संदेश देते हैं।

भक्ति और समर्पण (अध्याय 12)- यह जीवन को एक उच्च उद्देश्य के प्रति स्वयं को समर्पित करने की प्रेरणा देता है और अहंकार को समाप्त करता है। गीता के ये सिद्धांत मनुष्यों के चरित्र निर्माण, मानसिक शांति, नेतृत्व क्षमता, आत्मनिर्भरता और समाज सेवा में

सहायक हैं। गीता का अध्ययन मनुष्यों को व्यक्तिगत, मानसिक, और सामाजिक विकास के लिए प्रेरित करता है और उन्हें एक नैतिक और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने का मार्ग दिखाता है। अतः मनुष्य के व्यावहारिक जीवन के लिए गीता के नैतिक दर्शन की उपादेयता असंदिग्ध है। इसके अतिरिक्त गीता के नैतिक आदर्श समाज के अन्य क्षेत्रों में भी उपयोगी है जैसे- शिक्षा के क्षेत्र में, व्यवसाय एवं प्रबंधन में, परिवार एवं समाज में, राजनीति और प्रशासन में, मनोवैज्ञानिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में, पर्यावरण संरक्षण में एवं चिकित्सा के क्षेत्र में आदि।

3. अनुसंधान की समस्या (Problem to be investigated):

इस शोध कार्य में निम्नलिखित समस्याओं का गहन अध्ययन और विश्लेषण किया जाएगा।

- अरस्तु, स्वामी विवेकानंद और भगवद्गीता में वर्णित नैतिकता की परिभाषाओं में क्या-क्या समानताएं और भिन्नताएं हैं?
- मानव विकास में नैतिकता का क्या योगदान है?
- तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण और सोशल मीडिया के युग में नैतिकता का क्या स्थान है?
- नैतिकता का अभाव मनुष्यों में मानसिक तनाव, सामाजिक अलगाव और मूल्य संकट को कैसे प्रभावित करता है?
- मानव नेतृत्व और समाज सेवा में नैतिकता का क्या महत्व है?
- अरस्तु के नैतिक सिद्धांत और भारतीय परंपराओं में क्या अंतर है?
- नैतिकता को मनुष्यों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के साथ कैसे जोड़ा जा सकता है?

4. उद्देश्य एवं प्रेरणा (Research Objective and Motivation):

इस शोध कार्य का उद्देश्य मानव तथा समाज के विकास के लिए नैतिकता को अरस्तु, स्वामी विवेकानंद और भगवद्गीता के संदर्भ में समझाना और उसका विश्लेषण करना है। इस शोध के प्रति प्रेरणा वर्तमान समाज मे बदलावों, नैतिक मूल्यों और सद्गुणों के प्रति मनुष्यों की उदासीनता से उत्पन्न समस्याओं से मिलती है।

5. अनुसंधान प्रश्नावली (Research Question):

1. नैतिकता की प्रकृति उसके मूल्य और सिद्धांत क्या है?
2. नैतिकता का विकास कैसे हुआ?
3. मानव विकास के लिए नैतिकता कितना महत्वपूर्ण है?
4. अरस्तु के अनुसार नैतिकता क्या है?
5. स्वामी विवेकानंद के अनुसार नैतिकता क्या है?
6. भगवद्गीता के नैतिक अवधारणाओं का क्या महत्व है?
7. नैतिकता के सिद्धांतों को मनुष्यों के समग्र विकास में कैसे लागू किया जा सकता है?
8. भगवद्गीता के कौन से प्रमुख उद्देश्य नैतिकता को बढ़ावा देते हैं?

6. अनुसंधान का प्रारूप एवं पद्धति (Research Design and Methodology):

इस शोध कार्य में विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक विधि का उपयोग किया जाएगा। इस शोध कार्य से संबंधित पुस्तकों, विभिन्न विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों तथा पुस्तकालय से प्राप्त शोध सामग्रियों को प्राथमिक स्रोत के रूप में अध्ययन में शामिल किया जाएगा। शोध कार्य हेतु द्वितीय स्रोत पुस्तकालय से प्राप्त शोध ग्रंथ, पत्रिकाओं का उपयोग किया जाएगा। जिसमें शोध के सैद्धांतिक पहलू के साथ-साथ व्यावहारिक पहलू पर विचार किया जाएगा। यह शोध कार्य शुद्ध रूप से दार्शनिक शोध है।

7. तथ्य संकलन (Source of Data collection):

प्रस्तावित शोध में तथ्य संकलन के लिए स नैतिकता से संबंधित मूल ग्रंथों का अध्ययन किया जाएगा: इस शोध कार्य से संबंधित पुस्तकों और दार्शनिक चिंतकों द्वारा प्रकाशित शोध प्रबंधों, प्रकाशित लेखों, रचनाओं आदि की सहायता ली जाएगी।

8. तथ्य विश्लेषण (Data Analysis):

विभिन्न स्रोतों द्वारा प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण प्रमुख चार चरणों में किया जाएगा सर्वप्रथम तथ्य संग्रह, दूसरा तथ्य व्यवस्थितता, तीसरा तुलना और चौथा निष्कर्ष। इस तथ्य विश्लेषण के माध्यम से शोध कार्य को स्पष्ट एवं प्रभावी बनाने में मदद मिलेगा।

9. <u>वर्तमान समस्या के संदर्भ में समाज में इसकी प्रासंगिकता (It's relevance to present day problem and need of the society):</u>

वर्तमान समय में तनाव, आत्मविश्वास की कमी, करियर संबंधी दबाव, सामाजिक मीडिया के प्रभाव से लगभग सभी लोग जूझ रहे हैं। इस समस्याओं का समाधान एक दिन में नहीं हो सकता लेकिन नैतिक मूल्यों के प्रतिदिन प्रयास करने से हो सकता है। अरस्तु का 'मध्यम मार्ग' स्वामी विवेकानंद का 'युवा जागरण' और भगवद्गीता का 'कर्म योग' आज के मनुष्यों को सही दिशा देने में मददगार हो सकते हैं। इन सिद्धांतों का पालन न केवल जीवन को संतुलित और खुशहाल बना सकता है, बल्कि सार्थक जीवन जीने में मदद कर सकता है।

10. <u>वर्तमान में प्रस्तावित शोध का योगदान (Contribution to existing knowledge):</u>

यह शोध कार्य वर्तमान में अत्यधिक महत्वपूर्ण है यह मानव कल्याण तथा सामाजिक विकास की दिशा में एक अस्थाई और गहन प्रभाव डालने का कार्य करता है जो निम्नलिखित है-

1. मानव विकास में नैतिकता का पुनर्स्थापन-

चरित्र निर्माण: आज के युग में, नैतिकता की कमी से नैतिक पतन और मानसिक अस्थिरता जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। यह शोध मानव जाती को नैतिक मूल्यों जैसे कि साहस, आत्म-अनुशासन, और सेवा के महत्व को समझाने में मदद करेगा।

शिक्षा प्रणाली में सुधार: नैतिक शिक्षा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बनाने के लिए इस शोध के निष्कर्ष सहायक हो सकते हैं।

2. समकालीन नैतिक संकट का समाधान-

डिजिटल युग में संतुलन: सोशल मीडिया और डिजिटल जीवनशैली ने नैतिक संकट उत्पन्न किया है। यह शोध स्वर्ण माध्य (Golden Mean) के सिद्धांत और गीता के 'स्थिर बुद्धि' के विचार के माध्यम से संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करेगा।

नेतृत्व कौशल: नैतिक नेतृत्व और सामाजिक जिम्मेदारी के लिए यह शोध मनुष्यों को प्रेरित करेगा।

3. भारतीय और पश्चिमी नैतिक दर्शन का समन्वय- यह शोध अरस्तु की नैतिकता, स्वामी विवेकानंद के आध्यात्मिक दृष्टिकोण और भगवद्गीता की शिक्षाओं को जोड़कर भारतीय और पश्चिमी नैतिक विचारधाराओं का समन्वय स्थापित करेगा।

वैश्विक नैतिक समस्याओं के लिए एकीकृत समाधान प्रदान करने में इसका योगदान होगा।

4. आत्म-ज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य में योगदान- आत्म-नियंत्रण का विकास स्वामी विवेकानंद की "आत्मा की शक्ति" और गीता के ध्यान (ध्यान योग) के विचार मानसिक स्वास्थ्य में सुधार कर सकते हैं।

सकारात्मक सोच: यह शोध मनुष्यों को तनाव, अवसाद, और मानसिक अस्थिरता से उबरने के लिए व्यावहारिक उपकरण प्रदान करेगा।

5. नैतिकता और सतत् विकास- यह शोध पर्यावरणीय नैतिकता और सामूहिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने में मदद करेगा जो आज के सतत् विकास लक्ष्यों के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

भगवद्गीता के "सर्वभूत हितेरता" (सभी के कल्याण) और अरस्तु की सामुदायिक जिम्मेदारी के विचार, सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी को बढ़ावा देंगे।

6. नीतिगत सुधारों में योगदान- सार्वजनिक नीति और सामाजिक सुधारों में नैतिकता को प्राथमिकता देने के लिए यह शोध मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

कार्यस्थल, शिक्षा, और सामाजिक जीवन में नैतिकता का पुनर्स्थापन संभव होगा।

11. <u>भविष्य में कार्य होने की संभावना (Future work):</u>

नैतिकता का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है जिसमें पर्यावरणीय स्थितता से लेकर तकनीकी नैतिकता और वैश्विक न्याय तक के कई समकालीन मुद्दे शामिल है। यह शोध कार्य यह पता लगाने का प्रयास करेगा की नैतिकता उपरोक्त मुद्दों को संबोधित करने के लिए व्यावहारिक रूप से उपयोगी है या नहीं। इस विश्लेषण से मनुष्यों को वास्तविक दुनिया के मुद्दे पर नैतिक सिद्धांत का प्रायोज्यता पर पुनर्विचार करने के रास्ते खुल सकते हैं। यह शोध कार्य न केवल वर्तमान समय में ही उपयोगी होगा बल्कि भविष्य में भी इस विषय पर कार्य करने की संभावना है। भविष्य में इस क्षेत्र में शोध किया जा सकता है, जैसे कि मनुष्यों के नेतृत्व कौशल और नैतिक विकास को बढ़ावा देने के लिए इन सिद्धांतों का उपयोग करना। अरस्तु के सिद्धांत

को मानसिक स्वास्थ्य और आंतरिक संतुलन के लिए लागू किया जा सकता है, जबकि स्वामी विवेकानंद और भगवद्गीता के विचारों को मनुष्यों में आत्मविश्वास, समाज सेवा और निष्काम कर्म के लिए प्रेरणा देने में उपयोगी बनाया जा सकता है। इस शोध से समाज में नैतिक और मानसिक रूप से सशक्त मानव जाति के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

12. संभावित अध्याय (Tentative Chapters):

भूमिका

अध्याय 1 : नैतिकता की अवधारणा

अध्याय 2 : अरस्तु के अनुसार नैतिकता संबंधी अवधारणा

अध्याय 3 : स्वामी विवेकानंद के अनुसार नैतिकता संबंधी अवधारणा

अध्याय 4 : श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार नैतिकता संबंधी अवधारणा

अध्याय 5 : अरस्तु, स्वामी विवेकानंद और भगवद्गीता के नैतिकता संबंधी अवारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन

अध्याय 6 : अरस्तु, स्वामी विवेकानंद और भगवद्गीता के नैतिकता संबंधी अवारणाओं की समसामयिक प्रासंगिकता

निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची (References) :

1. वर्मा, वेद प्रकाश, नीतिशास्त्र मूल सिद्धांत, एलाइड पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड, 1994.

2. मिश्र, श्री नित्यानंद, नीतिशास्त्र (सिध्दान्त और व्यवहार), मोतीलाल बनारसीदास, 2017.

3. श्रीमद्भगवद्गीता, गीताप्रेस, गोरखपुर, 2019.

4. विवेकानंद, स्वामी, व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास, प्रभात प्रकाश्न, 2017.

5. मिश्र, प्रो० नित्यानंद, नीतिशास्त्र (सिद्धान्त तथा प्रयोग), मोतीलाल बनारसीदास, 2004.

6. चौरसिया, एम. पी., अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र, मोतीलाल बनारसीदास, 2006.

7. Adgadanandji Shree Paramhans Swami, Yatharth Geeta, Shree Paramhans Swami Adgadanandji Ashram Trust, May 2024.

8. विवेकानंद, स्वामी, राजयोग, प्रभात प्रकाशन, 2014.

9. विवेकानंद, स्वामी, युवकों उठो जागो, मनोज पब्लिकेशन, 2023.

10. विवेकानंद, स्वामी, कर्मयोग, प्रभात प्रकाशन, 2014.

11. वर्मा, अशोक, नीतिशास्त्र की रूपरेखा (पाश्चात्य और भारतीय), मोतीलाल बनारसीदास, 2017.

12. विवेकानंद, स्वामी, चरित्र निर्माण से राष्ट्र निर्माण, रामकृष्ण मठ, 2020.

13. विवेकानंद, स्वामी, भगवान श्री कृष्ण और भगवद्गीता, रामकृष्ण मठ, 2017.

14. निखिलेस्वरानंद, स्वामी, आधुनिक युवावर्ग और स्वामी विवोनन्द, रामकृष्ण मठ, 2023.

15. https://iep.utm.edu/virtue/#H4

16. https://www.researchgate.net/publication/312008175_Varieties_of_Virtue_Ethics

17. https://yss.ashram.org/tejaswi-yuva-abhiyan/